AP

सद्धेतु एवं असद्धेतु का ज्ञान आवश्यक- डॉ.कुंज बिहारी

अंतर्राष्ट्रीय वेब कार्यशाला में 430 प्रतिभागी शामिल

वाराणसी (काशीवार्ता)। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में सात दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वेब कार्यशाला के पांचवे दिन न्याय शास्त्री डॉ कुंज बिहारी द्विवेदी ने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि तत्व के निश्चय एवं विजय की प्राप्ति के सद्धेतु एवं असद्धेतु दोनों का ज्ञान आवश्यक है। व्याप्ति एवं पक्ष धर्मता से युक्त हेतु को सद्धेतु तथा व्याप्ति या पक्ष धर्मता से रहित हेतु को असद्धेतु कहते हैं। कहाकि हेत्वाभास के लक्षण का परिष्कार करते हुये हेत्वाभास के पाँच प्रकार हैं और उनका स्थल भी अलग-अलग है उसमें समन्वय करने के लिये तीन लक्षण का ग्रंथ में कथन है। अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो.राजाराम शुक्ल ने कहा सद्धेतु को जानने के बाद असद्धेतु के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होती है और दुष्ट को जानने के लिये दोष का ज्ञान पहले होना चाहिये इसलिये दोष के लक्षण का निर्वचन किया गया। कार्यक्रम संयोजक प्रो.रामपूजन पांडेय ने कहाकि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के इस कार्यशाला में लगभग 430 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। धन्यवाद व संचालन आचार्य डॉ. दुर्गेश पाठक ने किया। कार्यक्रम में न्यूजीलैण्ड, नेपाल, तिब्बत, बिहार, महाराष्ट्र, बंगलूर, उड़ीसा, भोपाल, उत्तरांचल, केरल, गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, हिमांचल प्रदेशों के देश विदेश के युवा विद्वानों ने प्रतिभाग किया।

शिक्षा है अनमोल रतन -वसीम अहमद

चंदौली। अल हनीफ एजुकेशन के चेयरमैन हाजी वसीम अहमद खान ने कहा कि शिक्षा है अनमोल रतन आधी रोटी खाइए लेकिन अपने बच्चों को शिक्षा जरूर दिलवाएं, पढ़ाई लिखाई इंसान के जीवन में बदलाव

लाती है। उन्होंने कहा कि खासकर मुस्लिम समाज

बलिया: 1 गये घर,

साध्य का विरोध ही नहीं अपितु हेतु का विरोध भी आवश्यक-कुलपति

सात दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वेब कार्यशाला में कई देशों के प्रतिभागियों ने किया प्रतिभाग

वाराणसी (काशीवार्ता)। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित सात दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वेब कार्यशाला के अन्तिम दिन रविवार को तिरुपति राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो. कृष्णा विश्वनाथ शर्मा ने कहा की बाध नामक हेत्वाभास एक महान दोष कहा जाता है। यह अनुमिति रूपी कार्य का प्रतिबन्धक होता है। कहा कि समस्त पृथ्वी में गन्ध नामक गुण रहता है परन्तु जो घट उत्पन्न ही हुआ उसमें गन्ध नहीं माना जाता है। अतः घट में गन्ध की सिद्धि करने पर बाध दोष होता है। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. राजाराम शुक्ल ने कहाकि दोष का ज्ञान इसलिये जरूरी है ताकि उसे त्यागा जा सके। केवल साध्य का विरोध ही नहीं अपितु हेतु का विरोध भी आवश्यक है।

कार्यशाला के समापन पर कुलपति ने कहाकि ऐसे कार्यशाला होते रहने से विषयगत स्थितियाँ स्पष्ट होती हैं। साथ ही अन्वेशित भाव भी जागृत होता है। कार्यशाला में देश विदेश के युवाओं ने प्रतिभाग कर निश्चित ही शास्त्रों के प्रति अपने जिज्ञासा को शान्त करने का प्रयास किया। प्रो रामपूजन पांडेय ने सभी का स्वागत

और धन्यवाद व्यक्त किया। कहाकि आज विद्यार्थियों को ऐसे कार्यशालाओं की आवश्यकता है। कार्यक्रम का संचालन डा. कुन्ज बिहारी द्विवेदी ने तथा धन्यवाद डॉ दुर्गेश पाठक ने किया।

श्रमिक स्पेशल व बसों से बलिया पहुंचे प्रवासी कामगार

बलिया। उनके चेहरे सफर की दुर्दशा की कहानी बयां कर रहे थे, उन्हें देखने से ऐसा लग रहा था, मानो वे महीनों से भूखे-प्यासे हों। रविवार को दिल्ली, पंजाब, महाराष्ट्र से आने वाली श्रमिक स्पेशल ट्रेनों से 550 प्रवासी कामगार बलिया पहुंचे। इन कामगारों ने यात्रा की व्यथा बयां की। सुरेमनपुर के राम दरश ने बताया कि ट्रेन में सवार अधिकतर श्रमिक चैनपुलिंग कर रास्ते में ही कहीं उतर गए।